जिनवाणी स्तुति

(रचयिता – आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
भव सागर से तारण हारी, ओ जिनवाणी माँ-2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
शरणा में तेरी, जो भी आता है
सच्ची सुखशान्ति, वो नर पाता है
खुशियाँ मिलती हैं, जीवन में हरपल
यादें रहती हैं, चेतन की पलपल
भव-भव में भी हो उपकारी, ओ जिनवाणी माँ-2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
सात तत्व, छह द्रव्य, महिमा बतलाती
तू ज्ञायक प्रभु है, हमको सिखलाती
बंध-आतम में, अन्तर बतलाया
भेदज्ञान करना, हमको सिखलाया
बना दिया है आत्मबिहारी, ओ जिनवाणी माँ
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
जन्म-जरा मृत्यु, रोग नशाती है
आतम अनुभव का, मार्ग दिखाती है
मां जग में तुझ सा, कोई न हितकारी
वीतराग विज्ञान तेरी बलिहारी
तीर्थंकर मुख से अवतारी, ओ जिनवाणी माँ
आतम अनुभव की लोरी गाती हो